9-9-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

मेहनत जो भी होती है इतना राजयोग पने लिये वो है ही आत्मअभिमनी बनने में। याद के बल से बाप से वर्सा लेना। बाप को सर्वशक्तिवान कहा जाता है। और अंग्रेजी में उनको आथारटी कहा जाता है। ज्ञान का सागर। सन्यासी विदवान लोग भी अपने को शास्त्रो की आथारटी समझते है। अब बाप जिनको ज्ञान का सागर कहा जाता है वो तो शास्त्र नही पढ़ते है नां। शास्त्र आद पढते है तो झूठे ठहरे नां। ज्ञान का सागर तो कुछ भी पढ़ता नही है।वो तो है ही नालेज फुल। उनको तो सब नालेज है। सृष्टी की आद मध्य अन्त की नालेज है। मनुष्य सृष्टी रूपी झाड का बीज है। उनको कहा जाता है सत्य चित आनन्द स्वरूप। ज्ञान का सागर सुख का सागर.....सबका सागर ही सागर है। सागर भी कम थोडे ही देता है। कोई2 तो चित्र दिखाते है कि सागर से देवता निकले जो कि सागर से रत्नो की थालियां देते थे। सागर को भी देवता कह देते है। अच्छा देता किनको है? लिखा हुआ है कि सागर से देवता निकले जो कि रत्नो की थालियां भर2 देते है। कौन लेते है?(हम लेते है) वास्तव में एक को नही देते है। बाबा ज्ञान सागर बैठ कर इन मे प्रवेश कर तुम बच्चो को रत्न देते रहते है। यह ज्ञान सागर की बात है।इन के शरीर में प्रवेश कर तुम सभी बच्चो को झोली भरते है। भगवानोवाच अर्जुन प्रति। एक अर्जुन तो नही है नां। तो यह रत्नो की बात है। ज्ञान सागर शिव बाबा इनमें बैठ झोली भरते हैं बच्चो की। कहते है नां झोली भर दो बम-बम महादेव। अब महादेव शिव को तो नही कहेंगे। वो तो शंकर को समझते है। उनके पास फिर पैसे कैसे होंगें। अब ब्रह्मा दवारा तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नो की झोली भर रहे है। इस पढाई से फिर तुम यह बनते हो। गरीब से गरीब भी वहाँ पर तो पदमपति बन जाते है।वहाँ पर तो अणगिनत धन होता है। गिनती ही नही होती है। 2500वर्ष के बाद भी मन्दिर बनते है तो उनमें कितने हीरे जवाहर लगे रहते है।राजाये मन्दिर बनाते है तो प्रजा भी बनायेगी।अनेक मन्दिर होते है। शिव बाबा बैठ रूहानी बच्चें आत्माओं को समझाते है।आत्माओं की भी पूजा होती है। आत्माओं के बाप की भी पूजा होती है।रुद्र पूजा कहते है। लाख-2 बनाते है। कोई 50 हजार कोई 10 हजार भी बनाते है। लाख सालीग्राम बनाने में कितना समय लगता होगा। पूजा कर फिर मिटी में मिला देते है फिर दूसरे दिन बनाते है।उसको ही रुद्र यज्ञ कहते है।बाप कहते है कि तुम्हारी पूजा भी होती है। शिव बाबा का तो एक ही शिवलिंग का रूप है जिनकी ही पूजा होती है। बाप की पूजा होती है फिर आत्माओं की भी पूजा होती है।तो तुम्हारी डबल पूजा होती है नां। तुमको ऊँच मर्तबा मिलता है बाप कहते है कि तुम रावण मत पर हमको कितनी गालियाँ देते हो।ईश्वर सर्वव्यापी है। कच्छ-मच्छ अवतार मे है तो कितनी गालियाँ देते है। अपकार करते है नां। मै तो उपकार ही करता हूं। इनका तो गायन भी है कि एक-2 ज्ञान रत्न पदमों की मिलकियत का है। कथन ही नही कर सकते है। यह ज्ञान ही रत्न है। वो रत्न तो कौडी मिसल है। भल सन्यासियों के पास पैसा है परन्तु काम के नही है।मनुष्य अज्ञान नींद में सोये हुये है।पैसे पिछाडी में क्या करेंगें? सभी पिछाडी में भस्म हो जावेंगें। फिर बाप भी तो लेंगे ही नही।कहेंगें तुमसे लेकर और फिर मकान आद बनावें सब भस्म हो जावे। बाप तो किसी से भी नही लेवे तो भी मालिक है नां? समय नाजुक होता जावेगा फिर पैसे क्या करेंगें? गायन भी है नां किनकी दबी रहेगी धूल में.....नशन सबकी सभ्नी में है नुकसान। मैं शाहुकार हूँ, मै प्राईमिनस्टर हूँ? मेरा इतना व्यापार है। बाप कहते है कि नश्वर सब्नी मे है नुकसान। यहाँ पर तो तुम कहते हो नां कि हम नर से नारायण बनेंगें। यह है ही नर से नारायण बनने की कथा। बाप बच्चो को बैठ समझाते है। बाप खुद बताते है कि मै साधारण बूढे तन में प्रवेश कर आता हूँ।यह है भाग्यशाली रथ। वो लोग तो फिर समझते है कि बैल होगा। बैल को ही जाकर मन्दिर में रखा है। शिव तो भृकुटी में ही बैठेंगें।बैल की भी आजकल तो भृकुटी में ही शिव दिखाते है।अब बैल कहा से आया?

सूक्ष्म वतन में सर्प कहाँ से आया जो कि शंकर को दिखाते है? बाप बैठ राँग और राईट बताते है। माया के राज्य में झूठी माया झूठी काया है। विख से पैदा हुआ हुआ शरीर है नाँ। वही पढते नही। इनको कहा जाता है सर्वगुण सम्पण.... ऋषी मुनी तो कह देते है कि हम रचता और ==== रचना को नही जानते है। फिर दुका लगाते रहते है। आपही कहते भी है कि झूठी माया.....झूठा सबो संसार। सच खण्ड भी भारत ही बनता है। अब तो बच्चो को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। आत्मा सुनती है बाप दवारा। मनुष्यों को देह का अभिमन रहता है। यहाँ तो बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझो। आत्मा परमात्मा का सुन्दर मेला यहाँ पर होता है। मूल वतन में थोडेई मिलेंगें। मेला इसको कहेगें जीवात्मा और परमात्मा। बाप भी इस समय जीवपरमात्मा है। वो तो पर है। उनको मेला नहीं
* ********* *************
कहेगें। अभी मेला है जबकि बच्चे मिलते है। बाप देता है तुम लेते हो। लेना-देना होता है। बाप भी बहुत दान करते है। तुम भी सब कुछ देते हो। भारत ही महान दानी गाया जाता है। महादानी है। तुम बच्चे ही भारत ही पर जीत पाते हो। फिर तुम ही हार खावेंगें। और किसी धर्म के लिये ऐसा नही कहा जाता है। हमेशा याद करो कि शिव बाबा रूहानी बच्चो को समझाते है। बाबा कहते है कि मै हर 5000 वर्ष बाद आकर तुमको समझाता हूँ। जो जो मेरी मत पर चल कर पवित्र बनते है वो ही ऊँच पद पाते है। विनाश काले विप्रीत बुधी... विनाश काले प्रीत बुधी.. विप्रीत बुधी हो मरना कि ठिक बिस्तर में कह देते है। तुम्हारी तो कितनी प्रीत बुधी है। तुम रूहानी पण्डे हो। यात्रा आत्मा करती है। यह है रूहानी यात्रा। वो तो है जिस्मानी पण्डे। तुम हो रूहानी पण्डे। अभी तमोप्रधान सेसतोप्रधान जरूर बनना है। नही तो सजायें भी खाओगें तो पद भी भ्रष्ट होगा। ओम
10-9-67 रात्री क्लास :-
* * * * * * * * * * * * * * * बाप पूछते है कि सभी आत्मअभिमनी होकर बैठे हो? मेहनत ही सारी इसमे है। सभी को यही समझाओ कि शिव बाबा को याद करोगें तो पाप कट जावेंगें। कल्याण ही इसमे है कि बाप को याद करो। बोलने से उनको तीर लगेगा। और खुद ही याद की यात्रा मे नही होगें तो उनको कुछ भी असर नही होगा। मूल बात है ही याद की। तुम बोलते हो कि भूल जाते है। क्योंकि आधा कल्प तक देहअभिमन मे रहे हो नाँ। देही-अभिमनी बनो तो शीतल भी बनो। तत निकल जोवेगी आत्मा शीतल हो जावेगी। मुख्य बात पर ही ध्यान देना है। मुरली सुनना और सुनाना यह तो कथा सहज है। मुख्य है याद। यह तो जानते हो नाँ कि शिव बाबा हमारा बाबा है वो हो हमारा टीचर भी है। गुरू है साथ मे ले जावेंगें। परन्तु याद ही नही करते हो। सो भी निराकार को कहते है कि वो है हमारा बाप टीचर सतगुरू है। बेहद का ही बाप बेहद का ही टीचर है। रहम दिल है। इस छी-2 दुनियाँ से ले जाते है। मनुष्य तो समझते है कि यहाँ पर ही स्वर्ग है। स्वर्ग कोई दूसरा थोडेई है। बाप तो समझाते है नाँ कि बच्चे अब तो तुम नर्कमे हो। स्वर्ग सत्युग को कहा जाता है। नर्क कलयुग को कहा जाता है। पुरानी दुनियाँ भी इनको कहा जाता है। यह वेश्यालय है विकारी ही रहते है। निरविकारी को वाइसलेस कहा जाता है। इतनी सहज बात को भी कोई ' तो विदवान आचार्य नही जानते ` है। मुख से कहते है कि बाबा भूल जाते है। योग नही लगता है। और मुरली पढते रहते हो रीज फिर टीचर को भूल जाते हो। बाप ने कितना सहज किया है। माया बहुरूप बल है। अर्थात बलवान है। परन्तु माया क्या चीज है वो नही जानते है। भाजी का भी अर्थ नही समझते है। सृष्टी का चक्र चलता है बाप कितना सहज समझाते है। बहुत मीठा बनो। शान्त मे ही अपने नशे मे रहना चाहिये। पैसे कौडी जो कुछ भी है वो सब खलास हो जाना है। हम आत्मा है हाथ खाली जाना है। आत्मा कहती है कि मै तो खाली नही मै तो बहुत धन इकठा कर जाती हूँ। अच्छे मीठे-2 रूहानी सपूत बच्चो को बापदादा का याद प्यार और नमस्तेओम